नवोन्मेषी कृषक सम्मेलन का आयोजन

दिनाॅंक 2 जून, 2018 को भाकृअनुप- भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थानए इज्जतनगर एवं भाकृअनुप-कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान कानपुर द्वारा संयुक्त रूप से कृषि विज्ञान केन्द्र-आई.वी.आर.आई द्वारा "नवोन्मेषी कृषक सम्मेलन" का अयोजन किया गया । इस सम्मेलन में उत्तर प्रदेश के 50 जनपदों के 50 नवोनमेषी कृषकों कों सम्मानित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार) डा. ए.के. सिंह थे। आपने अपने उद्बोधन में कहा कि यदि किसान की आय को बढ़ाना है तो कृषि को व्यावसायिक बनान होगा जिसके लिए मिश्रित कृषि के साथ- साथ जैविक खेती को अपनाना होगा। आपने बताया कि वर्ष 2010 में मैसूर में सर्वप्रथम "नवोन्मेषी कृषकों का राष्ट्रीय सम्मेलन" का आयोजन किया गया जिसमें देश के 200 से अधिक नवोन्मेषी कृषकों ने भाग लिया। उन्होंने कहा कि आज देश में कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किसानों के लिये 15 लाख से अधिक प्रशिक्षण आयोजित किये जा रहे तथा सूचना प्रौद्योगिकी से भी 2 लाख किसानों को जोड़ा गया है। उन्होंने कहा कि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का यह प्रयास रहा है कि अधिक से अधिक किसानों को लाभान्वित करने के लिये नवीन तकनीकों को पहुचाँया जाय जिसके लिये किसानों के बीच बराबर संवाद स्थापित किये जा रहे हैं। उन्होंने नवोन्मेषी किसानों का आव्हान किया कि आप सभी ने कृषि के क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया है तथा मैं अपेक्षा करता हूँ कि आप अपने गाँव के अन्य 10 किसानों को इसी तरह प्रेरित करें जिससे उनकी भी आय में वृद्धि हो तथा वे भी आपकी तरह नवोन्मेषी कृषकों की श्रेणी में शामिल हो सकें। उन्होंने कृषकों से अपील की

कि कृषि करने की तकनीकों को सोशल मीडिया के माध्यमों द्वारा प्रचार प्रसार करें जिससे अन्य प्रदेशों के कृषक भी लाभान्वित हो सकें। उपमहानिदेशक ने नई-नई प्रजातियों के पंजीकरण की आवश्यकता को भी बताया। उन्होंने कहा कि पी.पी.वी.-एफ.आर.ए के अन्तर्गत 5000 प्रजातियों को चिन्हित कर रजिस्टर्ड कराया गया है और इसका उपयोग राष्ट्रीय धरोहर के रूप में किया जायेगा।

संस्थान के निदेशक डा. आर.के. ंिसंह ने इस अवसर पर नवोन्मेषी किसानों को बधाई देते हुए कहा कि इस तरह के सम्मेलनों द्वारा परस्पर संवाद के साथ-साथ नवीन तकनीकों का भी ज्ञान होता है जिससे कृषक लाभान्वित होते हैं। डा सिंह ने मृदा स्वास्थ्य पर गंभीर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि अगर हमें अपनी कृषि से अच्छी पैदावार लेनी है तो उसके पोषण के बारे में विचार करना होगा उसके लिए जैविक खेती को बढ़ावा देना होगा ,साथ ही पराली तथा अन्य जो हम फसल लेने के बाद खेत में बचे फसल अवशेष एवं कूड़ा आदि के जलाने को बन्द करना होगा । आपने कहा कि खेतों से पार्थेनियम घास को भी हटाना होगा क्योंकि इनके द्वारा उत्पादन प्रभावित होता है तथा एलर्जी पैदा करती है। । उन्होंने

किसानों से तालाबों के पानी को स्वच्छ रखने तथा पानी को बचाने की भी अपील की। इस अवसर पर अटारी कानपुर के निदेशक डा. यू.एस गौतम ने भी कृषकों को सम्बोधित किया साथ ही नरेन्द्र देव कृषि प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय फैजाबाद के निदेशक प्रसार डा. ए.पी. राव, चन्द्रशेखर कृषि प्रौद्योगिकी विश्व विद्यालयए कानपुर के निदेशक प्रसार डा घूम सिंह , सरदार वल्लभभई पटेल कृषि विश्वविद्यालय, मोदीपुरम के निदेशक प्रसार, डा. एस.के. सचान ने भी किसानों को सम्बोधित किया।

संस्थान के संयुक्त निदेशक प्रसार शिक्षा डा. महेश चन्द्र ने इस अवसर पर उत्तर प्रदेश के विभिन्न जनपदों से पधारे किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि किसानों में भी वैज्ञानिक सोच होती है वह भी नये-नये

प्रयोग करते हैं तथा वैज्ञानिकों द्वारा बताये गयी तकनीकों का अनुसरण करते है जिससे किसानों का बहुत फायदा होता है। उन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किये जा रहे इस तरह के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने संस्थान के इतिहास के बारे में बताते हुए कहा कि 128 वर्ष पुराने इस संस्थान ने कई ऐतिहासिक उपलब्धियां हासिल की हैं तथा पशु चिकित्सा के साथ-साथ कृषि के क्षेत्र में यह संस्थान अपना विषेश योगदान दे रहा है। उन्होंने कृषकों द्वारा दिये गये पावर प्वाइंट प्रस्तुति की सराहना करते हुए कहा कि आज के शिक्षित कृषक ने कृषि की आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करना शुरू कर दिया है , साथ ही अपने खेती करने के ढंग को पावर प्वाइंट के माध्यम से दूसरों को भी प्रेरित करने का कार्य कर रहा है। इस अवसर पर 50 नवोन्मेषी कृषकों की सफलता की कहानियों का संग्रह के प्रकाशन का भी विमोचन किया गया।

कार्यक्रम का संचालन एवं धन्यवाद करते हुए संस्थान के कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी डा बृजपाल सिंह ने उपस्थित गणमान्य अतिथियों एवं किसानों का स्वागत करते हुए कहा कि इस नवोन्मेषी कृषक सम्मेलन को 3 तकनीकी सत्रों में विभाजित किया गया तथा प्रत्येक सत्र में 17 किसानों ने अपने कृषि संबंधी अनुभव को कम्प्यूटर पर पावर प्वांइट के माध्यम से प्रदर्शित एवं प्रस्तुत किया तथा प्रत्येक सत्र के 3 अध्यक्ष बनाये गये थे। जिसके उपरांत इनके द्वारा फीड बैक प्राप्त किया गया तथा इनकी संस्तुतियों को कार्यवाही के लिए भेजा जायेगा।

इस अवसर पर विभिन्न जनपदों के कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी सहित संस्थान के संयुक्त निदेशक, कैडराड डा. वी.के. गुप्ता, सहित विभिन्न विभागों के विभागाध्यक्ष जैसे डा आर.पी. सिंह डा. हरेन्द्र गुप्ता, डा. एस. महमूद, डा. मुखर्जी, डा. आर.एस. सुमन, डा. पचेयेप्पन अन्य वैज्ञानिक, अधिकारी एवं कर्मचारीगण उपस्थित रहे। इस कार्यक्रम में नवोन्मेषी कृषक, कृषि विज्ञान केन्द्र के प्रभारी, वैज्ञानिक एवं कृषि विश्वविद्यालयों को मिलाकर कुल 160 अतिथियों ने अपनी सहभागिता दर्ज की।